बना दो मधुर मेरा जीवन

बना दो ऐसा मेरा जीवन।
कि मातृभूमि हेतु बेहिचक
कर दूँ तन मन धन अर्पण।
बन सुमन सुरभि मधुरस
शुचि सरल छलहीन सरस
बितरूँ जन–जन में अमृत कण !

देना रसना में मधुर वचन!
हृत्तन्त्री की तान से मेरी
अकर्ण विषधर हो जाय नतफन।
बना दो मधुर यह जीवन।
प्रेम, परहित, सेवा से मेरी
धरती बन जाय स्वर्ग – भुवन।

बना दो ऐसा मेरा मन।
जग के सुख दुःख का दर्पण।
पोंछ जन–जन के नयनों के
अश्रु कण करूँ मरण वरण ।
प्रभो बनाओ ऐसा मेरा तन
कि अपनी फौलादी बाँहों से
अप्रतिहत, अविचल गति से
कर सकूँ सदा अन्याय – दमन।

राधाकान्त मिश्र

शिक्षक के लिए :

शिक्षक पहले छात्रों को इस प्रार्थना की समान भाव वाली कविता सुनाकर उनके मन में अच्छे गुणों की भावना भर देंगे।

शिक्षक छात्रों को ऐसी कविताओं के उदाहरण देंगे जिनके पात्र अपने त्याग और बलिदान से महान बन गए हों। छात्र ऐसे उदाहरणों से प्रेरित होकर अपने चरित्र को सुधारने में ध्यान देंगे।

शब्दार्थ

हेतु	–	के लिए
बेहिचक	–	बे + हिचक, बिना संकोच के
सुमन	–	फूल
सुरभि	–	सुगंध
मधुरस	–	शहद, मधु
शुचि	–	पवित्र
फौलादी	–	फौलाद से बना, इस्पात का
अप्रतिहत	–	अ + प्रतिहत, अबाध
अविचल	–	अ + विचल, अटल
रसना	–	जीभ
हृत्तन्त्री	–	हृत् + तंत्री, हृदय के तार, स्नेहभरी बातें
तान	–	राग, विचार
अकर्ण	–	अ + कर्ण, बिना कान वाले, जो दूसरों की बात न सुने।
विषधर	–	साँप, दुष्टजन
नतफन	–	जिस साँप का फन नीचे झुक गया हो
परहित	–	परोपकार

भावबोध:

बन..... अमृत-कण= मैं फूल जैसा कोमल और सुंन्दर बन सबको खुश कर दूँ। सुगंध का मधु बन सबको अमृत का स्वाद चखाऊँ।

जग.....दर्पण= संसार के सुख से सुखी और दुःख से मैं दुःखी बनूँ। सबके साथ सहानुभूति रखूँ।

हृत्तंत्री की..... नतफन= मैं अपनी स्नेहभरी बातों से, प्यार से किसीकी न सुनने वाले दुष्ट व्यक्ति को भी विनम्र बना दूँ।

अनुशीलनी

प्रश्न१. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर बताइए :

(i) कवि किसके लिए तन-मन-धन अर्पण करना चाहते हैं ?

(ii) कवि जन-जन में क्या वितरण करना चाहते हैं ?

(iii) कवि प्रभु से किसे सुख-दुख का दर्पण बनाने की प्रार्थना करते हैं ?

(iv) कवि मरण का वरण करने से पहले क्या करना चाहते हैं ?

(v) कवि ने किसे अकर्ण कहा है ?

(vi) इस कविता के कवि कौन हैं ?

प्रश्न२. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(i) कवि मातृभूमि हेतु क्या करना चाहते हैं ?

(ii) कवि अपने मन को क्या बनाना चाहते हैं ?

(iii) कवि कब मरण-वरण करना चाहते हैं ?

(iv) कवि अपनी फौलादी बाँहों से क्या करना चाहते हैं ?

(v) कवि अपनी रसना के लिए क्या चाहते हैं ?

(vi) कवि की हृत्तंत्री की तान से क्या हो जाएगा ?

(vii) यह धरती कैसे स्वर्ग-भुवन बन जाएगी ?

प्रश्न ३. पाठ के आधार पर शून्यस्थानों को भरिए :

बना दो ऐसा ---------

-----हेतु ------कर दूँ-----अर्पण

-----गति से ।कर सकूँ सदा ------।

प्रश्न ४. समझिए और लिखिए ।

मातृभूमि, अर्पण, सरस, अमृत, मेरा, दर्पण, अश्रु, मरण-वरण, अप्रतिहत, रसना, मधुर, हृत्तंत्री, प्रेम, धरती, स्वर्ग ।

भाषा-कार्य :

एक ही अर्थ वाले अनेक शब्द होते हैं। ये पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं।

जैसे- सुमन के पर्यायवाची शब्द हैं : फूल, पुष्प, कुसुम ।

प्रश्न५ .नीचे दिए गए शब्दों के समान अर्थ वाले पर्यायवाची शब्द लिखिए:

पवित्र रसना विषधर शुचि परहित सुरभि

प्रश्न६ . नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। लिखिए:

मातृ + भूमि = मातृभूमि

छल + हीन = छलहीन

अश्रु + कण = अश्रुकण

हृत् + तंत्री = हृत्तंत्री

स्वर्ग + भुवन = स्वर्गभुवन

इस प्रकार के पाँच शब्द सोचकर लिखिए।

प्रश्न७ . विलोम शब्द लिखिए:

सरल, छलहीन, मधुर, अन्याय, हित

आपके लिए काम :

इस कविता को कंठस्थ करके कक्षा में सुनाइए।

इस प्रकार की भाववाली कविताओं का संग्रह करके अपनी कॉपी में लिखिए और दूसरों को सुनाइए।